तो हमारा क्या चलत, भया तहकीक ऐ ।
महामत कहे ऐ मोमिनों, और कहो हकीकत जें ॥१५१॥

जब मोमिनों ने सारे पत्र को पढ़ा तो सर्व सम्मति से उत्तर दिया कि हे धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी ! यदि राजजी की ऐसी इच्छा है तो हमें वही स्वीकार है । अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि अब आगे का बीता हुआ वृत्तान्त आप को सुनाते हैं ।

(प्रकरण ४७, चौड़ाई २४४०)

आगे छोटी पत्री वोही में पुरजी

ऐ समाचार सुनियो, हम सूरत और सिद्ध पुर ।
और उदय पुर मेरते, लिखे आये हम पर ॥१॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी महाराज ने बड़ी पाती के साथ छोटी पत्री में यह लिखा था कि एक शुभ समाचार मैं आपको देना चाहता हूं कि सराय रूहिल्ला में रहते समय इन्नाइन्जुलना सूरत पढ़ने से परमधाम की हकीकत पाई थी उसको हमने सिद्धपुर, उदयपुर, सूरत, मेड़ते में पत्र लिखा था । उन सब सुन्दरसाथ ने पत्रों का उत्तर भेजा है जो मेरे पास आये हैं ।

साथ भाई बदल के, लिख कर कहे बचन ।
पाती भी लिखी इत, विध करत हों रोसन ॥२॥

जो कुछ उन्होंने पाती में लिखा है, पाती में उसका बेवरा लिख कर शेख बदल के हाथ से भेज रहा हूं ।

हम सकुमार बाई की, बात का किया विचार ।
ये तो साहिबी बोहोत बड़ी, घूना घून नाहीं सुमार ॥३॥

मैंने औरंगजेब की आत्मा साकुमार की जागनी के विषय में विचार किया है कि इसके आलमगीर बादशाह का पद, शाही-जाहो-जलाल और भरपूर खजाने तथा अखूट भंडारों का पार नही है ।

धुर लगे मजलिस, कर ना सके कोए ।
और अपनी बात को, क्यों समझे संदेसे सोए ॥४॥

इसके आस पास इतना अटल पहरा है कि वह आम मजलिस की तरह से बैठ कर चर्चा नही सुन सकता और न बादशाह ऐसे में हमारे संदेश को सुन सकता है । इसलिए वह हमारी बात पर विचार नही कर पाया ।

Nijanand App

जो संदेसा देए के, पीछे फिरिए घर ।
जोलो घूटन घूटन सों बांध के, सुनावे ना इन पर ॥५॥

यह कोई दुनियां का ज्ञान नही है कि हम संदेशा देकर घर चलें जाए और उस पर बादशाह विचार कर ले तथा उसकी आत्मा जागृत हो जाए । यह तो परमधाम की अखण्ड वाणी ब्रह्म ज्ञान है । जब तक सुनने वाला और सुनाने वाला एकाग्रचित्त होकर नही बैठेंगे तब तक सुनने वाले की आत्मा जाग्रत नही हो सकती है ।

एह बात तो तब होए, तिस वास्ते लिख्या तुम ।
ज्यों ब्राह्मण गायत्री सूद्र को, कहे सुनावे नाहीं हम ॥६॥

ये बात तो तब होगी, इसलिए तुम्हें लिखकर भेज रहा हूं । जिस तरह ब्राह्मण लोग नीच जाति वालों को गायत्री मन्त्र नही सुनाते उसी तरह से आज की परिस्थिति के अनुसार मुसलमान लोग भी हिन्दुओं को न तो कुरान देते हैं और न उनके द्वारा कहे हुए ज्ञान को सुनते हैं ।

त्यों कुरान का मजकूर, हिन्दुओं न सुनावें कान ।
न उनकी बात आप सुने, तो क्यों कर होए पहिचान ॥७॥

इसलिए वे लोग हिन्दुओं को कुरान की चर्चा सुनने का अधिकार नही देते और न उनकी बात को खुद सुनते हैं तो फिर किस तरह से औरंगजेब बादशाह आपके दिए हुए पैगाम पर विश्वास कर लेता और उसकी आत्मा जागृत हो जाती ।

तिस वास्ते आपन को, जात भेस उपले ।
सब गोविन्द भेड़े की तुमको, पहिचान जात भेख के ॥८॥

इसलिए हमें कभी भी जाति भेद एवं वेशभूषा की ऊपरी पहचान को महत्व नही देना है । यहां तो गोविन्द भेड़े की तरह सारा संसार जाति भेद में उलझा है पर आपको तो इसका ज्ञान हो गया है ।

सो तो सास्त्र वेदान्त, साध पंथ पैड़ों में ।
सब कोई उड़ावे इनको, सब है चरचा इन में ॥९॥

वेदान्त शास्त्र और साधु-सन्तों की वाणियों में भी जाति भेद को उड़ा दिया गया है । सभी सम्प्रदायों में ऐसा ही उपदेश दिया जाता है तथा इसी विषय पर उनमें चर्चा होती है ।

कुरान देखे पीछे, बात महम्मद अलेहु सलाम ।
सब कड़ी हमारे घर की, है हमेसा दीन इसलाम ॥१०॥

इधर कुरान को देखने से यह विदित हुआ कि कुरान में हमारे ही घर का ज्ञान है एवं वह मोमिनों के द्वारा जाहिर किए हुए श्री निजानन्द सम्प्रदाय की एक महत्वपूर्ण कड़ी है ।

Nijanand App

तो हम जात भेख का, क्यों ना भानें सिर ।
संकुच करों किस वास्ते, ए भेख बदला यों कर ॥११॥

इस वास्ते अब इस जाति भेद और वेश भूषा को तथा लोक लाज मर्यादा को तोड़ कर हम नष्ट क्यों न करे । हमने तो साकुमार की आतम को जागृत करने के महत्वपूर्ण कार्य के लिए भेष बदला है । इसलिए हम संकोच क्यों करें ?

ऐसा जान हम बारह जने, पैठे बीच दरबार ।
सो हमको सकुमार ने, कहया मजलिसे यों कर ॥१२॥

इसी बात पर सोच विचार करके हम सुन्दरसाथ भेष बदल कर औरंगजेब के दरबार में उसके खास चबूतरे तक प्रवेश कर गए और बादशाह ने भी अपनी भाषा में हमारा फकीरी लिबास देखकर हमें मोमिन कह कर पुकारा ।

धन धन कहे सब हमको, पीछे उनके मन में ।
हमारा भासा अवगुन, क्यों हिन्दू मुसलमान ऐसे ॥१३॥

बादशाह सहित वहां सभी लोगों ने हमारी वाणी को सुनकर हमें धन्य-धन्य कहा किन्तु बाद में मुल्ला और काजियों को हमारी बदली हुई वेशभूषा अवगुण लगी । जिससे उन्होंने बादशाह के मन में कपट भर दिया । इसलिए बादशाह को सन्देह हो गया कि हिन्दू, मुसलमान का भेष बदल कर इस तरह क्यों आए हैं ?

किन ने भेजे आए हैं, कछू दगा है इन मन ।
ऐसा जान के साथ को, किए कोतवाल हवाले मोमिन ॥१४॥

काजियों ने कहा कि न जाने ये किसके भेजे हुए आए हैं ? इनके मन में कुछ कपट अवश्य होगा। यही सोचकर बादशाह के मन में शंका आ गई और उसने मोमिनों को जांच पड़ताल के लिए कोतवाल के हवाले कर दिया ।

काजीएं कहया कोतवाल को, जो सांच झूठ देखो तुम ।
ए कौन है कहां से आए, तुम चरचा कहो हम ॥१५॥

काजी ने भी कोतवाल को आदेश दिया कि इन लोगों की अच्छी तरह से जांच करो कि इनमें कितना सच है और कितना झूठ है । ये लोग कहां से आए हैं तथा इनका परिचय क्या है ? इन सब बातों की जांच करके मुझे बताओ ।

Nijanand App

बहुत बातें हमसों करी, तिस पीछे कहूया सुलतान ।
जो ए झूठे नही दगा नही, है मोमिन खास ईमान ॥१६॥

कोतवाल की जांच के बाद शेख इसलाम काजी ने भी हमसे कुरान की गुझ बातों पर पूछताछ की। फिर उसने बादशाह से कहा कि ये लोग झूट बोलने वाले या दगाबाज नही हैं । दीने इसलाम के अनुसार कुरान पर सच्चा विश्वास करने वाले ये सच्चे मोमिन हैं ।

तब चौकी बैठाई थी, ताको दिए उठाए ।
हवेली का हुकम हुआ, इनों दिए बैठाए ॥१७॥

तब बादशाह ने मोमिनों पर निगरानी के लिए जो चौकी बिठाई थी उसे उठा दिया और मोमिनों को अलग से हवेली देने का हुकम कर दिया, जिसमें वे मिलकर रहने लगे ।

विकार इनके मन में, आया था सो गया ।
अब हम रहे हैं, काम सुचत का भया ॥१८॥

बादशाह के मन में जो मोमिनों के प्रति सन्देह था, वह स्वतः ही उठ गया । अब हम लोग चिन्ता रहित होकर इन लोगों में रहते हैं और सचेत होकर दृढ़ता से काम कर रहे हैं ।

जिन सनंधे समझेगा, त्यों समझावें हम ।
अब हमारे काजी सों, मिलाप कर दिया तुम ॥१९॥

जिस प्रकार अब वह समझेगा, उसे उसी तरह से हम समझाएंगे । आपने काजी से मिलकर चर्चा करके मेरी पहिचान करा दी है । ये महत्वपूर्ण बात है ।

कोतवाल सों भी भया है, कागद सब सुलताने ।
मंगाये अपने पास, जमा किये अपने ॥२०॥

कोतवाल से भी आप सुन्दर साथ ने चर्चा की है । उसको भी मेरे आने की जानकारी हो चुकी है । सुलतान ने भी हमारे भेजे हुए संदेश के पत्रों को अपने पास मंगाकर रख लिया है ।

अब ए उच्चार करेगा, जेती बात जाहिर ।
सो समझावते खलक में, पड़ेगी बाहिर ॥२१॥

अब वह संदेश पत्रों को पढ़ेगा तथा उन पर विचार करेगा । बादशाह जितनी बातें लोगों से कहेगा, उतना ही हमारे प्रगट होने का प्रचार हो जाएगा । तब कयामत और ईमाम मेंहदी के प्रगट होने का समाचार फैल जाएगा ।

Nijanand App

और बात की हम सों, जब करेंगे तलब ।
तब हम तुमको लिखेंगे, तुम एकान्त बैठो अब ॥२२॥

बादशाह जब और बातों की जानकारी हमसे लेना चाहेगा तो हम आपको पत्र में वह लिखकर भेजेंगे, अब आप जिस जगह भी जागनी के लिए जाना चाहते हैं, वहां जा सकते हैं ।

अब तो हम जाहिर, लसगर है इमाम ।
थाना थिर कर बैठे, ऐते दिन छाना करते काम ॥२३॥

अब तो हम लोग इमाम मेंहदी के साथी मोमिन के रूप में जाहिर हो चुके हैं । कुछ दिन तक तो हम छिप कर काम करते थे किन्तु अब तो अपने ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी के मन्दिर की स्थापना करके बैठे हैं ।

सुलतान की जान में, होए बैठे जाहिर ।
अब तो हमको लखे, लख किए बाहिर ॥२४॥

सुल्तान की जानकारी में हम जाहिर हो कर बैठे हुए हैं । उन्होंने हमारी पहचान करके चौकी उठा दी है ।

तिस वास्ते हम भी, एक ही तरफ होयेंगे ।
तुमको दिल्ली के परवाने, खप होए तो भेजेंगे ॥२५॥

हम लोग भी एक ही कार्य में लगन के साथ लगे रहेंगे । इस सम्बन्ध में आपको दिल्ली के सब समाचार भेजते रहेंगे । आपके निर्देश की जब आवश्यकता होगी तो उसे लिख भेजेंगे ।

जब लों इन चरचा का, लगेगा बेसक ।
ऐसे कागद और दिलासा, लिख भेजें हुकम हक ॥२६॥

जब तक बादशाह और इनके साथियों को चर्चा सुनने की इच्छा रहेगी तब तक उनके संशय मिटाने के लिए सब सुन्दरसाथ को वहीं बैठे रहना है और श्री राजजी महाराज के हुकम से जो ज्ञान आपको चाहिए, वह प्यार भरे पत्रों से मैं भेजता रहूंगा ।

योंकर इन साथ को, ना उपजे विकार ।
गम दिल में ना होवहीं, रहे सनमुख परवरदिगार ॥२७॥

ताकि सुन्दरसाथ के दिल में किसी भी प्रकार की दुर्बलता न आए । इनके मन में किसी प्रकार का दुःख न हो । धाम के धनी श्री राज जी महाराज की सदा ही मेहर तुम्हारे साथ है ।

Nijanand App

तुम भी पाती उनको, लिख भेजो निसंक कर ।
सिरे तुम सब साथ के, सामें हुए यों कर ॥२८॥

अब आप भी निस्संकोच होकर सुन्दरसाथ को जगह-जगह लिखकर श्री निजानन्द सम्प्रदाय (दीने इस्लाम) के प्रति प्रेरित करो । सुन्दरसाथ में आप सर्वश्रेष्ठ हो, जो देश के बादशाह के सन्मुख ईमाम मेंहदी साहिब के आने तथा कयामत के जाहिर होने का संदेश देने के लिए तत्पर हुए हो ।

और बड़े मोहोरें मोहबड़के, आए लगे तुम ।
तिस वास्ते सब साथ को, पाव भरे हक हुकम ॥२९॥

इस छल भरे संसार के सबसे बड़े मोहरे औरंगजेब बादशाह तथा उसके अधिकारियों तक ये पैगाम श्री राज जी महाराज के हुकम से ही आपने पहुंचाकर मोमिनों का सिर ऊंचा किया है ।

अपना आपा निसंक, तुम डारयो सब साथ ।
तिस वास्ते लाहा ल्योगे तुम, पर हकें पकड़े हाथ ॥३०॥

इस महान कार्य के लिए आप लोगों ने निडर होकर तथा मौत से भी ना घबराकर अपने को न्यौछावर कर दिया है । इसलिए श्री राजजी महाराज ने अपार मेहर कर के शक्ति बख्शी है, जिसका लाहा (लाभ) परमधाम में मिलेगा ।

दज्जाल के घाव तुमको, मोहों सिर पर लगे ।
आपन जुध कहते हते, सो तुम जुध किए ए ॥३१॥

कुरान में महंमद साहब ने जो लिखा था कि ईसा रूह अल्लाह तथा ईमाम मेंहदी के जाहेर होने पर दज्जाल उनसे युद्ध करेगा । यं युद्ध पढ़कर हम बातें ही करते थे कि दज्जाल कैसे युद्ध करेगा ? तुमने ये दज्जाल से युद्ध करके दिखाया है । दज्जाल ने शेख इसलाम तथा कोतवाल के दिल में बैठकर तुम्हारे बेगुनाह होने पर भी तुम्हारे ऊपर सीधे प्रहार किया । जिसे आपने अपने सिर पर झेला ।

औरों को कहने की पाती का, ए जो हुआ अब जोए ।
तुमारे कहने का, एह करने का होए ॥३२॥

ये जो कुछ भी हुआ है, उसका समाचार अन्य सुन्दरसाथ को भी आप लिख भेजना कि ये जो कुछ हम आपको लिख कर भेज रहे हैं ये बात लिखने की नही है बल्कि करने की है ।

सो तो तुम किया, अब खबर राखियो तुम ।
इन मोरचे खबर, एह लिखते हैं हम ॥३३॥

ये कार्य जो आपने भली भांति किया है । अब सावधान होकर इसमें लगे रहना । आपके इस तरह मोर्चा लगाकर पैगाम की सफलता की सूचना हम भी सब जगह लिख रहे हैं ।

Nijanand App

तुम भेला जो कोई मिले, तिनकी कीजो तलास ।
जेती वस्त तुम पास है, जैसे धनी की है आस ॥३४॥

इस समय जो कोई आपको मिलने आए, उसको अच्छी तरह परखकर उसके मन के भावों को देखना। तुम्हारे पास ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी की मेहर से कितना ज्ञान है और धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी पर तुम्हारा कितना अटूट विश्वास है, यह बात जाहिर करके उनको समझाना ।

जैसे तुम आप हो, तैसा फुरमाया धाम ।
तैसे भारी हूजियो, तैसे कीजो काम ॥३५॥

हे प्यारे साथियों ! जैसे तुम साक्षात् पारब्रह्म की अंगना (ब्रह्मसृष्टि) हो, वैसे ही तुम्हारा अखण्ड घर परमधाम और सर्वशक्तिमान धाम के धनी हैं । वैसी ही रहनी में रहकर अपनी महान महिमा को बनाए रखना और उसी प्रकार से जागनी का काम करना ।

जैसा कलामों में है, तैसा ही भरयो पाए ।
एते दिन तुम मिने, आकार पकड़ बैठाए ॥३६॥

कुरान-पुराण में ब्रह्ममुनियों की जितनी ऊंची महिमा लिखी है, वैसे ही अपने कदम बढ़ाते जाना । इतने दिन तक श्री राजजी महाराज भी तुम्हारे साथ मनुष्य तन में बैठे हुए हैं ।

तिस वास्ते मेरा, चला जात मुलाज ।
अब मरजादा चलियो, राखियो मेरी लाज ॥३७॥

आप १२ सुन्दरसाथ यदि ऐसी कुर्बानी और रहनी करके न दिखाते तो मेरा मरातबा औरंगजेब के दरबार में मिट जाता । उसी महान महिमा के अनुसार ही आप वहां रह कर दिखाना । मेरी लाज आपको ही रखनी है ।

अब तुम एक दूजे से, भारी हूजियो तुम ।
अपने गुन बस कीजियो, बड़े मोहरे को लगे तुम ॥३८॥

अब तुम इस कुर्बानी की राह में एक दूसरे से आगे हो कर रहना । अपनी गुण, अंग, इन्द्रियों को वश में कर लेना । आप बड़े मोहरे औरंगजेब की आतम साकुमार की जागनी के कार्य में लगे हो ।

तिस वास्ते नया जो आवेगा, तुमारी वानी चाल देख के ।
तिस वास्ते भारी होइयो, चाल भारी दिखाइयो ए ॥३९॥

अब जो कोई भी नया सुन्दरसाथ आयेगा तो वह आप लोगों की कहनी और रहनी के अनुसार ही प्रेरणा लेगा । इसलिए महान आदर्श दिखाते हुए भारी चाल चल कर दिखाना ।

Nijanand App

हो तुम जान सिरोमन, जो तुम साथ समस्त ।
तुम बुधवान विचष्यन, तुम पे बड़ी है वस्त ॥४०॥

वैसे तो आप सब सुन्दरसाथ के मुकुट शिरोमणि हो । तुम्हारे पास जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान तथा विवेकशील बुद्धि है तथा तुम्हारे पास अखण्ड परमधाम तथा अक्षरातीत पारब्रह्म की पहचान कराने वाली वाणी की अखण्ड न्यामत है ।

तुम बड़ी बुध के खावन्द, क्या बहुत लिखिए तुम ।
अजान को लिखिएत हैं, तिस वास्ते बेर बेर कहा लिखें हम ॥४१॥

तुम महान बुद्धि के मालिक हो । आपके लिए हम और अधिक क्या लिखें । नासमझ लोगों को तो समझाकर लिखना पड़ता है । आप जैसे महान समझदारों को बार-बार क्या लिखें ।

चार दिना आपन को, है पत्री से मिलाप ।
आकार मिलाप ना होवहीं, तिस वास्ते जानो आप ॥४२॥

थोड़े दिन मेरा आपका मिलाप पत्री के द्वारा है । रूबरू मिलन नही हो रहा है । इसलिए यह पत्र लिखना पड़ रहा है । यह तो आप जानते ही हो ।

दोए सुकन तिस वास्ते, चांप के लिखे कलाम ।
हमको चार दिना जाना पड़े, वास्ते इसहीं काम ॥४३॥

हमने कस कर, अच्छी तरह तोल कर अर्थात् सोच समझ कर ये शब्द आपके लिए लिखे हैं । हमें यहां से इसी कार्य के लिए कुछ दिन बाहर जाना पड़ रहा है ।

सो भी कारज कारन, जान परत आगे ।
नातो हमारा जाना न होए, सो जानो तुम ए ॥४४॥

वह भी किसी कारज-कारण से ऐसा हो रहा है कि मुझे जाना पड़ रहा है । ऐसा श्री राज जी महाराज की प्रेरणा से हो रहा है । वह तो आप जानते ही हैं । वरना ऐसे हालात में मैं आपको छोड़ कर नही जाता।

तुम पाती लिखियो, सब साथ ऊपर ।
और नवतनपुरी, तथा खंभालिए पर ॥४५॥

अब आप अपने सभी मुख्य स्थानों पर सुन्दरसाथ को पत्र लिखना । नवतनपुरी, खंभालिये तथा अन्य सभी स्थानों के लिये पत्र लिखना ।

Nijanand App

तथा पोरबन्दर, तथा मंडई ठठे ।
तथा सूरत खंभात, तथा अहमदाबाद के ॥४६॥

साकुमार बाई औरंगजेब को जगाने में आप पर जो संकट आए उसका समाचार पोरबन्दर, मंडई, ठट्ठानगर, सूरत, खंभात तथा अहमदाबाद के साथियों को लिखना ।

और भरूच सिद्धपुर, तथा उदयपुर मेरते ।
सब साथ ऊपर, पाती लिखते रहियो ऐ ॥४७॥

भड़ौच, सिद्धपुर, उदयपुर तथा मेड़ते के सब सुन्दरसाथ को पत्र लिखते रहना ।

बोहोत खुसाल होए के, वस्त का दिखाइयो बोझ ।
महम्मद ईसा इमाम, बड़ा बोझ दिखाइयो खोज ॥४८॥

बहुत प्रसन्न एवं आनन्द मग्न होकर पत्र लिखना तथा इस महान कार्य का महत्व बताना । बसरी, मलकी, हकी सूरत अर्थात् अलिफ, लाम, मीम का अर्थ जो कुरान में महंमद साहब नही खोल सके थे, उसके भेद ईमाम मेंहदी ने आकर खोल दिए हैं ।

सब को वस्त दिखाए के, खण्डनी लिखियो तुम ।
गल गलते रोते जिन लिखो, कहो चोखा लिखत हैं हम ॥४९॥

तीनों स्वरूपों की पहचान का रहस्य बता कर माया में भूले हुए सुन्दरसाथ को जगाने के लिए खरे-खरे शब्द लिखना । नम्र बन कर गिड़गिड़ाते हुए तथा रोते हुए पत्र नही लिखना और कहना कि हम आपकी भलाई के लिए ही यह सब लिख रहे हैं ।

जो कोई तुमको, उत देवे दुख ।
तिसका सिर हम भान के, उत देवें सुख ॥५०॥

आप लोगों को जो व्यक्ति किसी भी प्रकार का कष्ट पहुंचायेगा तो हम उसके अहंकार रूपी सिर को कुचल कर उसका अभिमान नष्ट कर देंगे, जिससे आपको संतोष हो ।

अथवा कोई साथ में, उलटा होए देवे कसोट ।
सो तुम हमको लिखियो, ताए बांध मंगाये करें चोट ॥५१॥

यदि वहां आप सुन्दरसाथ को कोई विरोधी बनकर कष्ट पहुंचाये तो आप हमें पत्र लिख कर सूचित करना । उसको हम अपने हुक्म के द्वारा बुलाकर खण्डनी करके उसका अभिमान तोड़कर आपके अनुकूल बना देंगे ।

Nijanand App

हम जो भेख बदल के, पैठे बीच दरबार ।
सों उलटों सीधा करनें, तरफ परवर दिगार ॥५२॥

हम जो भेष बदल कर दरबार में गए थे वह केवल झूठी माया के राज्य के नशे में डूबे लोगों को बाहर निकाल कर महंमद साहब की दिखायी हुई राह पर चलाने की एक युक्ति है, किसी भय या लालच से ऐसा नही किया ।

मुसलमान सों हम तो डरें, जो श्री देवचन्द्र जी परखी न होए ।
खोजी रई बाई बासना परखी, सब साथ जानत हैं सोए ॥५३॥

मुसलमानों से तो हम तब डरें जब इनके अंदर हमारी आत्मायें न हों और श्री देवचन्द्र जी ने खोजी बाई के अंदर रई बाई की आतम न परखी हो । उन्होंने किसी-किसी मुसलमान में आत्मा का होना कहा था जो सब सुन्दरसाथ ने सुना था ।

जात भेस जो तुम रख्या, ताको श्री देवचन्द्र जी भान्या सिर ।
सो ना सकते जाहिर कर, अब समझे फिरके बहत्तर ॥५४॥

पहले तुम जाति-भेष के बन्धन में बंधे थे, धनी श्री देवचन्द्र जी ने इस जाति भेद को जड़ से ही उखाड़ दिया था । किन्तु इसे श्री देवचन्द्र जी जाहिर नहीं कर सके इसलिए श्री निजानन्द सम्प्रदाय के समूह में भी जाति भेद से होने वाले बहत्तर फिरके भी जाति भेद के बन्धन तोड़ने की महिमा की हकीकत को समझ जाएगें ।

तो हम राज की आज्ञा से, जाहिर किए चौदे तबक ।
विकार सारी विस्व का, मेट दई सब सक ॥५५॥

अब ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी के हुक्म से श्री निजानन्द सम्प्रदाय के मूल सिद्धान्त, जाति भेद को मिटाने के लिए हमने चौदह लोकों में जाहिर कर दिया है और सारे संसार के अहंकार भरे इस संशय को मिटा डाला है ।

ऐसी पाती लिख के, उठाए खड़े करो ।
चार बचन जिन भांत के, तैसे तहां धरो ॥५६॥

इस प्रकार की ज्ञान चर्चा पत्रों में लिखकर माया में भूले हुए सुन्दरसाथ को जाग्रत करके खड़ा करो। जिस जगह पर जैसे महत्वपूर्ण, प्रभावशाली शब्दों की जरूरत पड़े, वहां वैसे ही शब्द लिखना ।

तैसे ही तिन ऊपर, लिख के भेजो तुम ।
जिनको जैसा घटता, ताको पाती लिखो सब कुंम ॥५७॥

इस प्रकार की बातें पत्र में लिखकर भेजना । जिस प्रकार के पत्र जिसको लिखना आप उचित समझें वैसा ही लिखना ।

Nijanand App

तैसी बिहारी जी को, और नागजी अखई ।
नवतनपुरी भेजियो, जवाब आवत क्यों कर सही ॥५८॥

श्री बिहारी जी, नाग जी भाई और अखई भाई को उनके अनुसार पत्रियां लिख कर नवतनपुरी भेजना देखें वहां से आपको पत्र का कैसा उत्तर आता है ?

देखें बिहारी जी क्या लिखते, ए जवाब लेओ सिताब ।
ए पत्रियां लिख के, दुरूस्त करो अब किताब ॥५९॥

देखना है कि बिहारी जी आप के पत्र का क्या उत्तर देते हैं । उनसे पत्र का उत्तर जल्दी लेने का प्रयास करना । सुन्दरसाथ के विचारों को जान कर अपने किए हुए परमधाम के कौल को पूरा करके धनी को सब में जाहिर कर दो ।

अब तो तुम केसरी सिंह हो, ऊपर पहिरी पाखर ।
काहू मुलाहजा जिन करो, कासिद को भेजो आखर ॥६०॥

तुम सभी केसरी सिंह की तरह से शूरवीर हो । तारतम वाणी की पाखर से सुशोभित हो रहे हो । किसी को ऊँचे पद पर बैठा हुआ देख कर उसकी खुशामद मत करो । जब तक तुम वहां बैठे हो, पत्र व्यवहार अवश्य करते रहना ।

कासिद तहां लों भेजियो, उनके दिल की ल्याओ खबर ।
कोई तुम से आप छिपावहीं, सो मालूम होवे इन पर ॥६१॥

जब तक उन लोगों की तरफ से उत्तर न मिले, तब तक पत्र भेजते ही रहना । इससे उन लोगों के विचारों का पता चल जायेगा । यदि वे किसी कारण से अपने मन का संदेह व्यक्त करना नही चाहेंगे तो बार-बार पत्र लिखने से उनके मन की छिपी भावनाओं का पता चल जाएगा ।

जो जैसा तैसी तिनों, लिखियों तुम कलाम ।
ज्यों आगे अगिन के, मोम पिघलत तमाम ॥६२॥

सुन्दरसाथ की जैसी भावनाएं हैं, उसी प्रकार का पत्र आप उन्हें लिखें । जिस तरह अग्नि के सामने मोम पिघल जाता है, उसी प्रकार आपके शब्दों से लोगों के हृदय के भाव अवश्य बदल जाएंगे । तारतम वाणी की अग्नि उनके विकारों को गलाकर नष्ट कर देगी तथा उनके मन शुद्ध हो जाएंगे ।

और दयाराम के भाइयों नें, आगे आए दरबार ।
बातें इन भांते करी, ताए हम रूपैया देवें चार हजार ॥६३॥

हे सुन्दरसाथ जी ! एक विशेष बात की सूचना हम आपको देते हैं कि दयाराम के भाइयों ने सार्वजनिक रूप से इस तरह की बात कह दी है कि हमारे भाई दयाराम ने जो भेष बदल दिया है उसका हमें बहुत दुःख है । हम उस व्यक्ति को चार हजार रूपये इनाम में देंगे ।

Nijanand App

जो इनको मार डारहीं, ऐसी बात सुनाई कान ।
हमारी सरम जाएगी, जो होएगा मुसलमान ॥६४॥

जो हमारे भाई को मार डालेगा क्योंकि यदि वह मुसलमान बन गया तो हमारी इज्जत मिट्टी में मिल जायेगी, ऐसा हमने सुना है ।

तिस वास्ते इहां इनको, गोविन्द भेड़े की निसबत ।
मार डारत भाई को, पैसे दे के इत ॥६५॥

इस माया रूपी गोविन्द भेड़े की नगरी में भाई को भाई केवल अपनी मान मर्यादा रखने के लिए पैसे देकर मरवा देता है, इस बात को तुम अच्छी तरह से ध्यान में रख लेना ।

वास्ते अपनी सरम के, सब में एही स्वारथ ।
गोविन्द भेड़े इन भांत के, ए नजर में राखियों अरथ ॥६६॥

इस संसार में हर एक को अपनी इज्जत का ही स्वार्थ है । इस माया नगरी में सभी सगे सम्बन्धी स्वार्थी हैं । इस बात को तुम अच्छी तरह से ध्यान में रख लेना ।

ऐसो होए स्वारथी, गोविन्द भेड़ा चौदे तबक ।
एह बचन दृष्टान्त वास्ते, लिखा बेसक ॥६७॥

यह सारा संसार १४ लोक अपने स्वार्थ के लिए ही सगा सम्बन्धी है । यह हमने आपको समझाने के लिये दृष्टान्त रूप में लिखा है ।

तुम जान सिरोमन हो, भूलोगे न तुम ।
सब बात का बोझ जो, उठाए के लीजो कुंम ॥६८॥

आप सब तो बुद्धिवान शिरोमणि हो । कभी भी इस बात को भूलना नही । इसका मुझे पूरा विश्वास है । इस बात की पूरी जिम्मेदारी का बोझ अपने ऊपर ले लेना । इस जागनी के कार्य में सतर्क होकर रहना ।

तुम साथ मिने सिरदार, छाती काढ़ के कहे सुकन ।
वेद बन्ध की मरजाद, ताका सिर भाना मोमिन ॥६९॥

हे ब्रह्मसृष्टि मोमिनों ! तुम सुन्दरसाथ में शिरोमणि सिरदार हो । हम आपको दिल खोल कर कह रहे हैं कि वेदों ने जाति-पाति तथा धर्म की जिन मर्यादाओं को बांध कर मानव को बांट दिया, तुमने उन बन्धनों की मर्यादाओं का सिर तोड़ डाला है ।

Nijanand App

लोक मरजादा छोड़ के, मोरचा ढहाए मिने पैठे ।
तिन साथ में से, रहियो एक जागा के ॥७०॥

लोक लाज एवं मर्यादा का सिर तोड़कर ही आपने यह मोर्चा जीत लिया है । सभी १२ साथी एक जगह एक रूप होकर मिल कर रहना ।

तुम जुदे इनसे जिन पड़ो, नातो चेहरा होए तुमे ।
पीछे कहोगे ना कह्या, तुम समझो इन से ॥७१॥

तुम दयाराम को अकेले कभी मत छोड़ना । अन्यथा यदि कोई दुर्घटना अर्थात् दयाराम जी को किसी ने मार डाला तो तुम्हें सब सुन्दरसाथ में लज्जित होना पड़ेगा । आपको सावचेत होने के लिए मैंने यह लिखा है । बाद में यह न कहना कि हमको किसी ने बताया नही था । तुम इस बात को अच्छी तरह से समझ लेना ।

जब लाग देखूंगा, तब मैं लेऊं बुलाए ।
या बुलाओ मुझको, बैठो साथ मिलाए ॥७२॥

मौका देखकर मैं आपको वहां से बुला लूंगा । मेरी आवश्यकता देखो तो आप लोग मुझे बुला लेना। हम भी वहां आ कर आपके साथ रहेंगे ।

बिना मसलत, जिन करो कोई काम ।
सब परियाने कीजियो, देख अपना धाम ॥७३॥

आपस में विचार विमर्श किए बिना वहां कोई भी कार्य नही करना । श्री राज जी महाराज के चरणों का सहारा लेकर और अपने परमधाम के सम्बन्ध को याद रखते हुए एकमत होकर सलाह करके सब कार्य करना ।

हम तुमारी पाती का, करेंगे विचार ।
जब तुम जवाब लिखोगे, तब हम चलें बाहर ॥७४॥

आपके पत्र का मैं अच्छी तरह से विचार करूंगा । मेरे इस पत्र का उत्तर मिलने पर ही हम यहां से जागनी के कार्य के लिए किसी और जगह बाहर जायेंगे ।

हंस खेल हरख के, बांधोगे कमर ।
तुम लीजो बोझ उठाए के, रहो दिल दृढ़ कर ॥७५॥

हंसते खेलते प्रसन्न चित्त होकर जागनी के कार्य के लिए आप लोग कमर कस लेना तभी इस महान जागनी के कार्य का बोझ उठा सकोगे और दिल में दृढ़ कर लो कि श्री राजजी महाराज की मेहर से तुम्हें सफलता मिलेगी ।

Nijanand App

जो कदी आकार से, मैं जुदा रहों दो दिन ।
अन्तर गत दृष्टान्त, हुआ इलहाम रोसन ॥७६॥

यदि मैं आपसे दो दिन जागनी के कार्य के लिए जुदा हो भी रहा हूं तो मेरी आत्मा कभी भी आपसे जुदा नही हो सकती । यहां से श्री राजजी महाराज के हुकम से ही मैं बाहर जा रहा हूं ।

तिस वास्ते भीम भाई की, खबर पूछियो उदयपुर ।
अजूं भी न समझया, तिनका कहा करों क्यों कर ॥७७॥

भीम भाई को भी उदयपुर पत्र लिख कर उनका समाचार जान लेना । वे अब तक माया में भूले हुए हैं और अभी तक श्री निजानन्द सम्प्रदाय के सिद्धान्तों को नही समझे हैं । केवल वेदान्त पक्ष में ही भूले पड़े हैं इसलिए हम उसके अनुसार कैसे चल सकते हैं ? इससे अधिक हम उसको और क्या कह सकते है ?

तिनसे क्या समझेंगा, नींद अन्तर हैं जोर ।
ए राज के हुकमें भई, ताए क्यों ए ना सकें मरोर ॥७८॥

इन पत्रों से भी वे क्या समझेंगे । उसकी आत्मा मोह की नींद में भूली पड़ी है । यह माया भी श्री राजजी महाराज के हुक्म से बनी है । भीम भाई इस से पीछा कैसे छुड़ा सकता है ?

तिस वास्ते एह भोम, है हांसी का ठौर ।
कोई न होवे जागृत, बिना हुकम कोई और ॥७९॥

इसलिए इस संसार को हंसी का ठिकाना कहा गया है । श्री राजजी महाराज के हुक्म के बिना यहां किसी की भी आत्मा जाग्रत नही हो सकती ।

अनेक भांत के मोहजल, नये नये उठत तरंग ।
इन में जो सावचेत, कोइक है धनी का अंग ॥८०॥

इस संसार सागर में अथाह मोहजल भरा हुआ है । जिसमें मानसिक दुर्बलताओं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की नयी नयी तरंगें उठती रहती हैं । इसमें श्री राजजी के हुक्म से ही कोई ब्रह्मसृष्टि सावचेत रह सकती है ।

मेरे तांई तो इन समें, लिया है मोल तुम ।
तिस वास्ते तुमारी आतम से, मेरी होए न जुदी आतम ॥८१॥

इस समय आपने जागनी के इस महान कार्य में कुर्बानी करके मुझे मोल ले लिया है इसलिए मेरी आतम कभी भी आपकी आतम से जुदा नही हो सकती ।

Nijanand App

ए निश्चे सत जानियो, मुतफे कुंन अलेह ।
आपोपा जरूर संभारना, बोझ आया सिर पर ऐह ॥८२॥

यह निश्चित रूप से सत्य मानो कि श्री राजजी महाराज के प्रति दृढ़ निश्चय रखने वाले आप सच्चे सुन्दर साथ हो । जागनी के महान कार्य की जिम्मेदारी आप पर है । अपना भली भाँति ध्यान रखते हुए सम्भल कर रहना ।

इहां की हकीकत, भाई सेख बदल कहेंगे ।
ताको सही जानियो, सुनियो कानों से ॥८३॥

यहां की पूरी हकीकत के समाचार शेखबदल आपको आकर कहेंगे । उसको अच्छी तरह से सुनकर सत्य जानना ।

सेख बदल आए पीछे, हमको बड़ो भयो सुख ।
हम तुमको मिलेंगे, तब हंस के भाने दुख ॥८४॥

शेख बदल भाई आपके समाचार लेकर जब आये तो उनसे आपकी बातें सुन कर हमें बड़ा सुख मिला। मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हुआ । जब हम आप से मिलेंगे तब हंस हंस कर एक दूसरे के दुःख दूर करेंगे ।

हमको बड़ा हरख है, सब सुख में रहियो कुंम ।
दिन जागनी के आए नजीक, स्याबास लालबाई तुम ॥८५॥

हम आपसे बड़े प्रसन्न एवं संतुष्ट हैं । आप सदा आनन्द मंगल में रहना, ऐसी मेरी शुभ कामना है। जागनी के दिन नजदीक आ गए हैं । शाबाश ! लालबाई जी ! आप इसी प्रकार सेवा करती रहना ।

तुम सूर धीर पना किया, आगे धरे कदम ।
अब सेख बदल आये सुख, पावे तुमारी आतम ॥८६॥

तुमने हकीकत में शूरवीरपना करके दिखाया है । जो स्त्री का तन होने पर भी ऐसे समय में सेवा में तत्पर रही हो । अब शेख बदल के आने पर आपको भी समाचार मिलने पर प्रसन्नता होगी ।

सुख समाधान आनन्द की, रहो लिखते पाती ।
सब साथ को परणाम, लालबाई को कहती ॥८७॥

सदा आनन्द मंगल के समाचारों का पत्र लिखते रहना । श्री लालबाई एवं सब सुन्दरसाथ को श्री इन्द्रावती जी की आतम का प्रणाम स्वीकार करना ।

Nijanand App

महामत कहे ऐ मोमिनों, ए पाती की हकीकत ।
अब मुकदमा कहों, फरदा रोज कयामत ॥८८॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी महाराज फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! इस पाती की कुल जानकारी आप को कही है । अब आगे कयामत को जाहेर करने की हकीकत आपसे कहता हूं ।

(प्रकरण ४८, चौपाई २५२८)

अब दिल्ली छोड़ उदेपुर आए

कामा पहाड़ी से होए, आए बीच आमेर ।
दिन एक दोए रह के, पीछे आए सांगानेर ॥१॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी मोमिनों की चिट्ठी आने के बाद राजस्थान की ओर पैदल चलकर आमेर (जयपुर) पहुंचे । आमेर में दो दिन रह कर वहां से श्री जी सांगानेर आए ।

थे मुकुन्ददास उदयपुर, उहां से आए सांगानेर ।
तहां चरचा करने लगे, सुना सोर लड़ाई का जोर ॥२॥

उधर मुकुन्ददास उदयपुर रहते थे । वहां से वो सांगानेर आए तथा सुन्दरसाथ से मिले । आपस में चर्चा होने पर यह पता चला कि १२ मोमिन जब इमाम मेंहदी साहिब के आने तथा कयामत के निशान जाहेर होने का पैगाम देने गए तो शरीयत के काजी तथा कोतवाल ने किस प्रकार मोमिनों पर अत्याचार किया तथा इस बात का अधिक शोर-शराबा था, जो मोमिनों ने भेष बदला था । वह सब कुछ मुकुन्ददास ने सुना ।

तब उहां से चले, आए पोहोंचे आमेर ।
उहां श्री जी साहिब जी की खबर सुनी, फेर आए सांगानेर ॥३॥

मुकुन्ददास जी सांगानेर से आमेर पहुंचे । वहां से आने पर उन्हें पता चला कि स्वामी जी यहां से सांगानेर चले गए हैं । तब मुकुन्द दास जी आमेर से पुनः सांगानेर आए ।

तहां राह बीच में, सेख बदल मिले ।
तिनसों मिल चल के, आए पेंडे मवासियों के ॥४॥

वहां राह में जाते समय मुकुन्ददास जी की मुलाकात शेख बदल जी से, जो दिल्ली से स्वामी जी से मिलने के लिए आ रहे थे, अचानक ही हो गई । दोनों सांगानेर से चलकर मवासियों की बस्ती के पास पहुंचे ।

Nijanand App